© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section: Engineering and Technology

शिव तथा रूद्र : एक परिचय

मोनिका यादव
(JRF शोधच्छात्रा)
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

द्युत्यर्थकदिव् से देव शब्द निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है– प्रकाशमान या कान्तिमान। व्याकरण में आचार्य पाणिनि ने दिव् धातु का अर्थ द्युति, क्रीड़ा आदि अर्थों में प्रयुक्त किया है।[1] सामान्य अर्थ में इसका अर्थ देव या देवता लिया जाता है। आचार्य यास्क ने इस शब्द के लिए द्युत, दा, दीप, दीवु आदि धातुओं का प्रयोग किया है।[2] इसके अलावा इन्हें अमर भी कहा और माना जाता है। वेदों में भी देवों के सम्बन्ध में विचार किया गया है। ऋग्वेद में कहा गया है कि देव अपने प्रारम्भ काल में मरण धर्मा या बाद में उन्होंने अमरता अर्जित की,[3] किन्तु वेदों, पुराणों में शिव की महिमा तथा उनके स्वरूप का बहुत ही विशुद्ध और अमर देवता के रूप में वर्णन किया गया है। उन्हें महादेव कहा जाता है। उनके कुछ रूपों का संक्षेप में वर्णन निम्नलिखित हैः–

शिव रूपः–

शिव शब्द का प्रयोग यजुर्वेद में किया गया है। वहाँ उन्हें रूद्र, शम्भु, शंकर आदि कहकर पुकारा गया है। उस प्रार्थना में शम्भु को, शंकर को और शिव को नमस्कार किया गया है।[4] वहां पर शिव से अपने कल्याणार्थ के लिए विशेष प्रकार से प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि शिव कल्याणकारी होवें, वे अपनी शक्ति युक्त औषधियों से हमारे जीवन को सुख प्रदान करें, वहां इन्हें शिव ही रूद्र हैं और रूद्र ही शिव है, इस प्रकार से कहा गया है।

अक्षर रूप में रूद्रः–

रूद्र शब्द रूदिर् धातु से, विच और यक् प्रत्यय लगकर बना है, जिसका अर्थ स्वयं रोने वाला या रूलाने वाला होता है।[5] रूद्र के स्वरूप के बारे में वेदों में अनेक प्रकार के कथन प्राप्त होते हैं। वे

---

1. दिवु क्रीड़ा.....गतिषु।। सि0 कौमुदी– 218–पेज
2. देवो दानाद वा ....देवः स देवता। नियुक्त 7.2.15
3. सतोनूनं कवयः .....अमृतत्वमानसुः। ऋक्–10/53/10
4. नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय य शिवतराम च। यजुर्वेद– पेज–267
5. सोऽरोदीद्यद्रोदीत्तस्माद्रुदस्य उद्वत्वम। तै0स0 1/5/1/1

अत्यन्त बलशाली हैं। उनके सुन्दर होंठ हैं, वे अपने शिर पर जटाजूट रखते हैं, इसलिए उनको कपर्दी कहकर पुकारा जाता है।[6] उनका निवास स्थान श्मशान बताया गया है अर्थात् वही इनका घर है, वे पिशाचों के देव हैं, वे शिरस्त्राण तथा कवच धारण करते हैं। उनकी शक्ति का बार–बार स्मरण किया गया है तथा उनसे रक्षा करने की प्रार्थना की गई है। एक स्थान पर कहा गया है कि आप लाल वर्ण वाले और जटाधारी हैं, आप महान तेजस्वी हैं, इसलिए हम आपका आह्वान करते हैं और कामना करते हैं कि आप हमें निर्भय बनायें।[7]

अक्षर रूप में रूद्रः–

रूद्र अजर, अमर और अक्षर रूप में शिव विद्यमान हैं, वे कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होते। उनके इसी रूप का वर्णन करते हुए अथर्ववेद में कहा गया है कि– हे भवः तुम्हारे प्राण के लिए तुम्हारे क्रन्दन के लिए तुम्हारे मायामय शरीर के लिए हमारा नमस्कार है, तुम कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होते, इसलिए अमर रूप में तुम्हे नमस्कार है।[8] जरा अवस्था से रहित रूद्र को नमस्कार है। जब उनका किसी प्रकार का क्षरण नहीं होता तो अक्षर वे ही हैं।

विश्वचर रूद्र मूर्तिः–

रूद्र अन्य रूप में भी विश्व में व्याप्त हैं। अथर्ववेद में उनकी व्यापकता की प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि– हे रूद्र! हम तुम्हे पूर्व, उत्तर और दक्षिण दिशाओं में नमस्कार करते हैं। तुम आकाश के मध्य में सबके नियंता के रूप में प्रतिष्ठित हो। ये चारों दिशाएं तुम्हारी हैं, स्वर्ग, पृथ्वी, अन्तरिक्ष सब तुम्हारे शरीर रूप ही हैं, तुम सब पर कृपा करने वाले और पूजनीय हों।[9] इसी प्रकार एक स्थान पर रूद्र को पर्वत पर रहने वाला बताया गया है।

शिव शक्तिः–

रूद्र, शिव रूप में शक्ति से सम्पन्न हैं, वे निरन्तर अम्बिका के साथ रहते हुए यज्ञ का पुरोडाश प्राप्त करते हैं।[10] वे सूर्य के माध्यम से प्रत्यक्ष हैं। सूर्य के उदय काल में सभी प्राणियों के कर्मों का विस्तार करते हैं, जो उनकी स्तुति करते हैं रूद्र अपनी शक्ति से उनकी रक्षा करते हैं।

रूद्र का चिकित्सक रूपः–

---

6. इमा रूद्रायतवसे.....अस्मिन्नानातुरम्। ऋक्– 322 पेज
7. नमो धृष्णवे च प्रमृशाय.....सुधनन्वने च – यजुर्वेद– 266
8. कन्द्राय ते प्राणाय याश्च ते शव रोपयः।
   नमस्ते रूद्र कृण्भः सहस्त्राक्षायामर्त्यः।। अथर्व0 581
9. पुरस्तात् ते नमः कृष्य उत्तराधरादुत।
   अभीवर्गाद दिवस्पर्यन्तरिक्षाय ने नमः।। अथर्व0–581
10. एस ते रूद्रभागः सह स्वस्त्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहैष। ते रूद्रः भाग आखुस्ते पशुः। यजुर्वेद–43

भगवान रूद्र औषधियों का वरदान प्राणियों के लिए देते हैं और पशु, मनुष्य आदि को निरोग बनाते हैं। उनके विषय में ऋग्वेद में कहा गया है कि– आकाश के घोर रूप वाले, लाल वर्ण वाले, जटाधारी तथा महान तेजस्वी रूद्र को हम नमस्कार करते हैं। वे वरणीय औषधियों को हाथ में धारण कर हमें सुखी करें तथा हमारी रक्षा करें।[11]

रूद्र का पशुप रूपः–

रूद्र का स्वरूप कठोर और क्रूर भी है, इसलिए प्रार्थना करते समय कहा जाता है कि– जटाधारी रूद्र का धनुष प्रत्यंचा रहित हो जाये, तरकस बाणों से खाली होवे, इनके बाणों का दर्शन न हो, खड्ग रखने का स्थान भी खाली हो, वे हमारे लिए सभी हथियारों का परित्याग कर दें।[12]

उपनिषद् और शिवः–

वेदों में वर्णित रूद्र और शिव के संदर्भों की ही भांति उपनिषदों में भी इनके भिन्न–भिन्न रूप का वर्णन किया गया है। श्वेताश्वतरोपनिषद् में कहा गया है कि परमात्मा परमेश्वर रूप में संयुक्त क्षर और अक्षर तथा त्यक्त एवं अत्यक्त का पालन पोषण करता है। शिव की सूक्ष्मता और ईश रूप में उनका अक्षर रूप उपनिषद् भी कहती है। जिस प्रकार घी के ऊपर उसकी झिल और अधिक सूक्ष्म होती है उसी प्रकार से परमात्मा भी अधिकतम रूप में सूक्ष्म है।[13]

शिव का सृष्टि कर्तृत्वः–

शिव के विषय में कहा गया है कि, जब वे रूद्र नाम से प्रथित हुए, तब अकेले ही सूक्ष्म थे, वे अकेले ही सम्पूर्ण भुवन पर शासन करते हैं। वे सभी जीवों के भीतर भी हैं और बाहर भी, वे सभी लोकों की रचना कर उन लोकों के अन्दर रहते हैं, उनकी रक्षा भी करते हैं अन्त में सभी लोकों को समेट भी लेते हैं।[14]

अथर्वशिरस् उपनिषद् में रूद्रः–

इस उपनिषद् में भगवान शिव के लिए रूद्र और महेश्वर शब्दों का प्रयोग किया गया है और इनकी अनन्त शक्तियों का आख्यान किया गया है। इस उपनिषद में इनके ओंकार, प्रणव, शिव आदि नामों की व्याख्या की गई है।

रूद्र के विविध नामों की व्याख्याः–

---

11. दिवो वराहमरूषं कपर्दिन त्वेषं रूप नमसा निह्यामहे। ऋक् 1/222
12. विज्यं धनुः कपर्दिनो विशष्यो बाण वां उत।। यजु0 258
13. घृतात्परं मण्डविवाति सूक्ष्मं ज्ञात्वा शिवं सर्व भूतेषु गूढम। श्वेता0 163
14. एकोहिरूद्रो न .....विश्वा भुवनानि गोपाः।। श्वे0–116

रूद्र का नाम सभी जगह प्रमुखता से दिया गया है। रूद्र के सम्बन्ध में कहा गया है कि आपके स्वरूप का ज्ञान ऋषियों को ही हो सकता है। सामान्य जनों को नहीं, इसलिए आपका नाम रूद्र है। जो भक्त ज्ञान के लिए भजते हैं, उन पर आप अनुग्रह करते हैं, सब भावों को त्याग आत्मज्ञान और योगेश्वर्य रूप से आप अपनी महिमा में स्थिर रहते हैं, इसलिए आपको महेश्वर कहते हैं।[15] आपको ओंकार इस कारण से कहा जाता है कि इसके उच्चारण से प्राणों को ऊपर की ओर खींचना पड़ता है। प्रणव के नाम का कारण यह है कि इसके उच्चारण करते समय ऋक्, यजु, साम, अथर्व, अंगीरस और ब्रह्मा आदि प्रणाम करने आते हैं। आप व्यापक हैं, अनन्त हैं, जन्म–मरण के भय से संसार को तारने वाले हैं, इसलिए आपको तारक कहा जाता है।

शिव का स्वरूपः–

उपनिषदों में कहा गया है कि जीव ही शिव है और शिव ही जीव है, जिस प्रकार धान का छिलका निकल जाने पर चावल बचता है उसी प्रकार से बन्धन से मुक्त जीव निर्बन्ध होकर शिव रूप वाला हो जाता है।

रूद्र की व्यापकताः–

रूद्र व्यापक हैं, रूद्र ने स्वयं कहा है कि मैं भूत, भविष्य और वर्तमान स्वयं हूं।[16]

रूद्र का सृष्टि कर्तृत्वः–

सृष्टि कर्तृत्व के विषय में कहा गया है कि वह एक ही देव हैं, जो सर्वत्र सभी दिशाओं में रहता है, सर्वप्रथम वहीं उत्पन्न हुआ।[17]

इस प्रकार रूद्र वैदिक वाङ्मय में, जहां रूलाने वाले देवता के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं, वहीं वे कृपा करने वाले देवता के रूप में भी प्रतिष्ठित हैं।

---

15. अथ कस्मादुच्यते.....भगवान महेश्वरः।। अथर्वशिरस्–398

16. सोऽब्रवीदꣳमेकः.....तेजसा।। अथर्वशिरस–393–394

17. एकोह देवः प्रदिशीनु.....सर्वोमुखः।। अथर्वशिरस् 399